चिड़ियों का शिकारी

इंडोनेशियाई लोककथा

चिड़ियों का शिकारी

इंडोनेशियाई लोककथा

चिन हर्न चेको

देश के शासक राजा इशाक को धनुर्विद्या से प्रेम था. जब उनके मित्र अन्य विषयों पर चर्चा करते थे, तब भी इशाक सुबह से शाम तक सिर्फ धनुष-बाण के बारे में ही बातें करते थे. जल्द ही, प्रजा को, राजा के तीरंदाजी के प्रेम का पता चल गया.

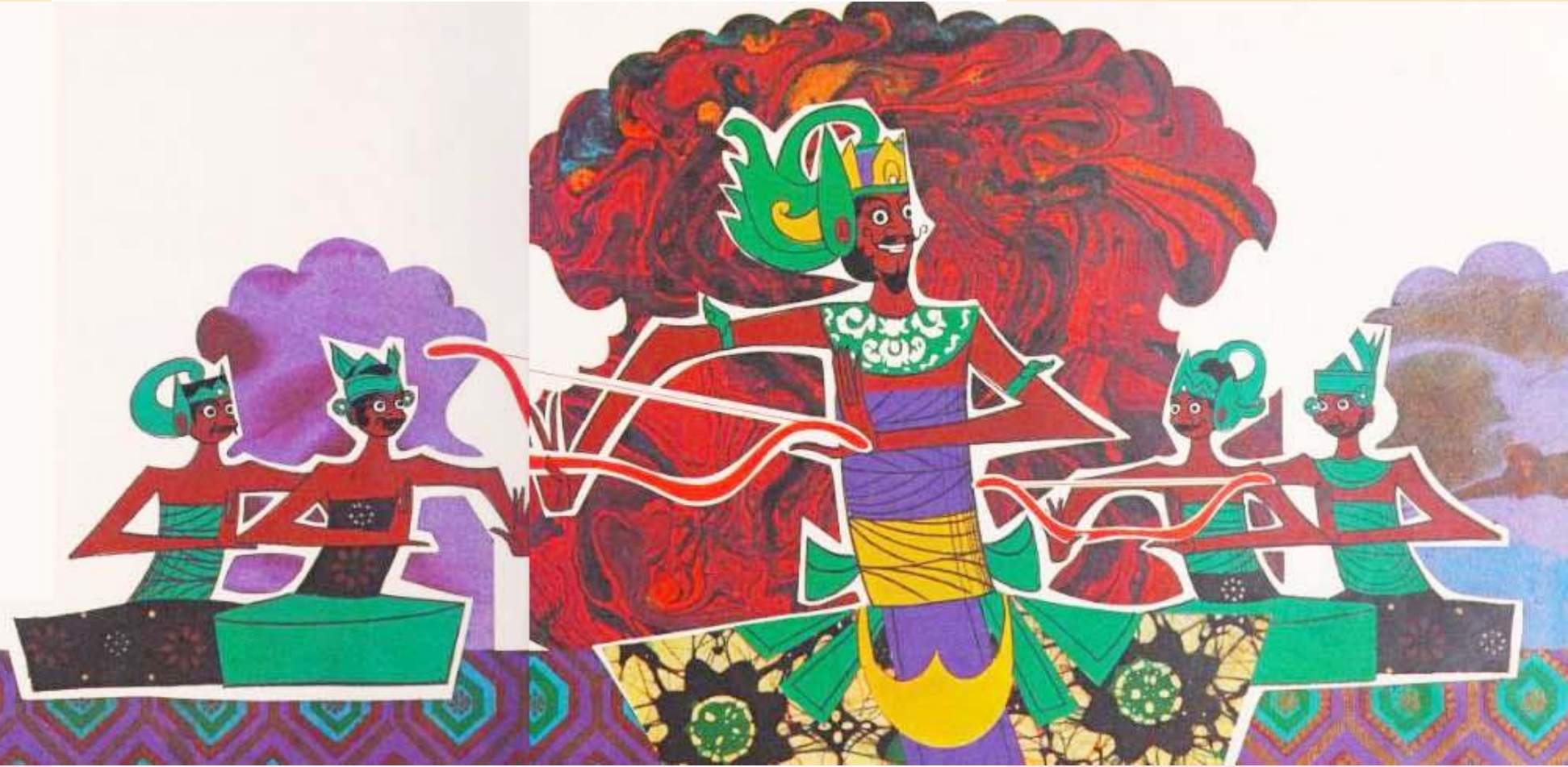

राजा इशाक की एक बहुत ही सुंदर कन्या थी जिसका नाम बिनतांग देवी था.

वो इतनी खूबसूरत थी कि हर युवक उससे शादी करने की ख्वाहिश रखता था.

लेकिन राजा इशाक ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वो देश के सबसे अच्छे तीरंदाज़ से ही अपनी बेटी से शादी करेंगे.

इसलिए, एक दिन राजा ने बेटी की शादी तय करने के लिए एक तीरंदाजी प्रतियोगिता आयोजित करने का फैसला किया.

दूर-दूर से कई तीरंदाज प्रतियोगिता में हिस्सा लेने पहुंचे.

लेकिन किसी को भी पुरस्कार नहीं मिला, क्योंकि इतने लोगों में से भी राजा को एक भी महान तीरंदाज़ नहीं मिला.

उसी देश में वजान नाम का एक गरीब शिकारी रहता था. रोज़ी-रोटी के लिए वो चिड़ियों का शिकार करता था.

शिकारी ने सुना कि राजा इशाक की एक सुंदर बेटी है जो देश के सबसे कुशल तीरंदाज़ से ही विवाह करने वाली थी.

वजान ने सोचा कि अगर उसकी राजकुमारी से शादी हो जाए तो बहुत अच्छा होगा. इसलिए उसने एक चतुर योजना बनाई.

उसने कुछ जंगली पक्षियों को एक जाल बिछाकर पकड़ा.

फिर उसने उन पक्षियों को मार डाला और प्रत्येक की दाहिनी आंख निकाल दी.

वजान ने पंछियों को डोरी से बांधकर एक बांस से लटकाया.

फिर वो महल की ओर गया.

वो रास्ते में चिल्लाया, "'एक-आंखों वाले पंछी बिक्री के लिए! एक-आंखों वाले पक्षी बिक्री के लिए!" जल्द ही बच्चे उसका पीछा करने लगे क्योंकि उन्होंने पहले कभी किसी आदमी को एक-आंख वाले पक्षियों को बेचते हुए नहीं देखा था.

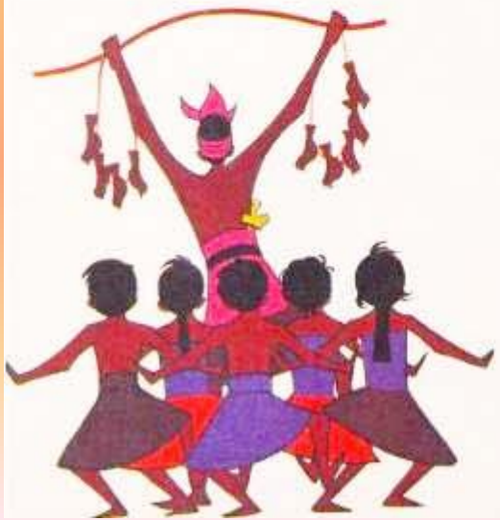

चलते-चलते वजान लगातार चिल्लाता रहा, "एक-आंखों वाले पंछी बिक्री के लिए! एक-आंखों वाले पक्षी बिक्री के लिए!"

अंत में, वो महल के द्वार पर पहुंचा. राजा ने जब अपने द्वार पर बच्चों की भीड़ देखी तो उसने मामले की पड़ताल करने के लिए वहां अपने नौकर को भेजा.

नौकर लौट आया और बोला, "महामहिम, बाहर एक गरीब शिकारी है जो एक-आंख वाले पक्षी बेच रहा है."

यह सुनकर राजा ने कहा, "उस आदमी को तुरंत अंदर भेजो."

फिर वजान को राजा के सामने पेश किया गया.

"क्या यह सच है कि तुम जिन पक्षियों को बेच रहे हैं, उनकी एक ही आँख है?" राजा इशाक ने पूछा.

"हाँ, महामहिम, मैं हमेशा अपने तीर-कमान से अपने पक्षियों की आंखों में ही तीर मारता हूं," गरीब शिकारी ने उत्तर दिया.

राजा इशाक को बड़ा आश्चर्य हुआ. उन्हें अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ. "नौजवान शिकारी, पक्षियों की आंख में तीर मारना कोई आसान काम नहीं है. तुम शायद देश के सबसे महान तीरंदाज़ होगे," राजा ने कहा.

"तुम जैसे महान तीरंदाज़ को एक सुंदर पत्नी मिलनी चाहिए. क्या तुम मेरी बेटी से शादी करोगे?"

गरीब शिकारी ने तुरंत हाँ में उत्तर दिया, "लेकिन, महामहिम, मैं केवल चिड़ियों का एक गरीब शिकारी हूं. मेरी औकात आपकी बेटी को एक राजसी जीवन देने की नहीं है?"

"अच्छा, तुम न केवल एक महान तीरंदाज़ हो, मैं देख रहा हूँ कि तुम एक ईमानदार आदमी भी हो. देखो, मैं राजा हूँ और मैं तुम्हारी ज़रुरत लायक सारा धन दे सकता हूँ. और जहां तक घर की बात है, तो तुम मेरे महल में रह सकते हो," राजा ने कहा.

यह सुनकर वजान बहुत खुश हुआ लेकिन उसने सावधानी से अपनी ख़ुशी व्यक्त नहीं की.

कुछ समय बाद, वजान और राजकुमारी की शादी हुई.

वजान को जो नये कपड़े दिए गए वो उसने पहन लिए.

अब वो अपने आप से काफी खुश था.

आखिर उसकी दिली इच्छा पूरी हुई थी.

अब उसके पास सब कुछ था - पत्नी के लिए एक सुंदर राजकुमारी और महल जैसा घर.

शादी के लिए बड़ी दावत दी गई.

राजा इशाक ने अपने कई शाही मित्रों को आमंत्रित किया.

वो एक खूबसूरत दिन था.

आसमान में हर रंग के पंछी उड़ रहे थे.

खाना बेहद स्वादिष्ट था और संगीतकार अपने साज़ों पर दिलकश धुनें बजा रहे थे.

सभी लोग दावत का मजा ले रहे थे.

अचानक, उत्साह से अभिभूत होकर, राजा इशाक उछले और उन्होंने कहा, "सुनो! अब मेरे दामाद - महान तीरंदाज़ हमें धनुष और बाण से अपना कौशल दिखाएंगे."

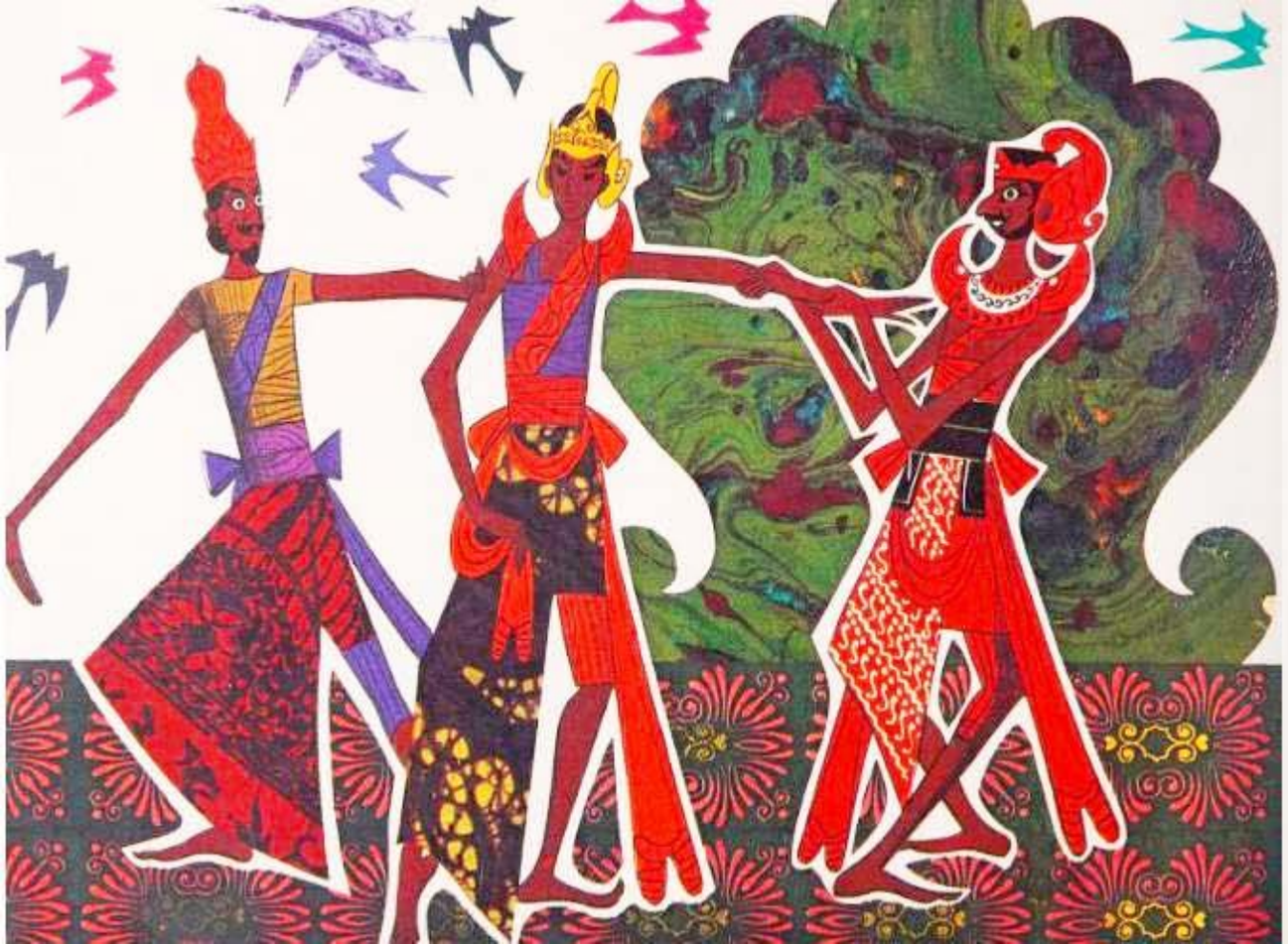

यह सुनते ही वजान लगभग बेहोश हो गया.

जब वो सदमे से कुछ उबरा, तो उसने कहा, "महाराज, मैं आपको अपना कौशल ज़रूर दिखाना चाहता हूं. पर मुझे डर है कि वो संभव नहीं होगा. क्योंकि मैं यहां आने से पहले तीर-कमान को अपने घर पर ही छोड़ आया था."

वजान को लगा कि उसने राजा को बहुत चतुर उत्तर दिया था.

लेकिन राजा अपनी बात से हटने वाला नहीं था. उसने कहा, "उससे क्या फ़र्क पड़ता है, तुम मेरे तीर-कमान का इस्तेमाल कर सकते हो." फिर राजा ने अपना तीर-कमान लाने के लिए तुरंत एक नौकर को भेजा.

वजान पूरी तरह से भयभीत था. वो डर में मारे काँप रहा था. वो जानता था कि जल्द ही सबके सामने उसकी असली पोल खुल जाएगी.

तभी नौकर राजा का धनुष-बाण लेकर लौटा और राजा इशाक ने उसे शिकारी के हाथों में थमा दिया.

"यह लो," राजा ने कहा, "अब हमें अपना कौशल दिखाओ."

वजान ने उससे पहले कभी धनुष-बाण का प्रयोग नहीं किया था. धीरे-धीरे उसने धनुष की डोरी खींची और तीर को आकाश की ओर इंगित किया. वो तीर को छोड़ने से डर रहा था. उसके कारण वो वहीं खड़ा रहा.

पूरे आकाश में पक्षी उड़ रहे थे. लोगों को आश्चर्य होने लगा कि उस महान तीरंदाज़ ने अभी तक एक भी तीर क्यों नहीं चलाया था.

कुछ लोग वजान की दयनीय हालत को देखकर खुलकर हंसने लगे.

एक ने कहा, "देखो, वो डर रहा है. उसे धनुष को ठीक से पकड़ना भी नहीं आता है!"

अंत में, उसमें से एक आदमी अपना धैर्य खो बैठा. वो शिकारी के पास गया और उसकी पीठ पर उसने एक जोरदार थप्पड़ मारा और कहा, "अब तो तीर चलाओ, महान तीरंदाज़!"

पीठ पर जोरदार थप्पड़ से, वजान के हाथ से तीर छूट गया. एक सारस आसमान में उड़ रहा था. तीर उस सारस को लगा और वो मरा हुआ पक्षी जमीन पर आकर गिर पड़ा.

राजा इशाक ने पक्षी को उठाया. वो यह देखकर चकित रह गए कि तीर ने सारस की पतली गर्दन को छेद दिया था.

"तुम वास्तव में देश के सबसे महान तीरंदाज़ हो," राजा ने कहा.

हर कोई हैरान था. लेकिन वजान ने बहुत नाराज़ होने का नाटक किया.

"मैं आजसे फिर कभी धनुष-बाण को हाथ तक नहीं लगाऊंगा." उसने जोर से कहा, "जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं हमेशा अपने पक्षियों की आंखों में तीर मारता हूं, गर्दन में नहीं. अगर किसी ने मेरी पीठ पर थप्पड़ नहीं मारा होता, तो मेरा तीर जरूर सारस की आंख में जाकर लगा होता."

राजा ने तुरंत उस आदमी को सजा सुनाई जिसने शिकारी की पीठ पर मारा था.

जहां तक वजान की बात थी उसने फिर कभी भी धनुष-बाण नहीं छुआ.
इसलिए सभी लोग यही मानते रहे कि वो देश के सबसे महान तीरंदाज़ था.

समाप्त